श्रीनवद्वीपधाम महात्मय

SGD

श्रीलगुरुदेव

श्रीलगुरुदेव

श्रीजह्नुद्वीप

जान्नगर — जह्नुद्वीप को अपभ्रंश भाषा में जान्नगर कहते हैं। यह स्थान वृन्दावन लीला के द्वादश वन में से एक श्रीभद्रवन है। इस स्थान पर श्रीजह्नु मुनि ने तपस्या करके श्रीगौरसुन्दर जी का दर्शन प्राप्त किया था। इस स्थान का प्राचीन इतिहास इस प्रकार है एक दिन श्रीजह्नु मुनि गंगा जी के किनारे बैठकर संध्या कर रहे थे कि उसी समय गंगाजी श्रीजह्नु मुनि का

कमण्डलु व अन्य पूजा की सामग्री बहाकर ले गईं। यह देखकर श्रीजहु मुनि अत्यन्त क्षुब्ध हो गये और क्रोध में भरकर उन्होंने एक चुल्लू में गंगाजी का सारा जल उठा लिया और पी गये। इधर राजा भगीरथ बहुत तपस्या करके गंगा देवी को अपने पितृपुरुषों के उद्धार के लिए ले कर आ रहे थे। कि अचानक राजा भगीरथ गंगा जी के अदर्शन से अत्यन्त चिन्तित हो गये। बाद में जब उन्हें सारी बात पता लगी तो उन्होंने श्रीजहु मुनि का दर्शन किया, उन्हें प्रणाम किया व स्तव स्तुति द्वारा उन्हें सन्तुष्ट किया। तब उन्होंने

अपनी जांघ से गंगा को बाहर निकाल दिया। तब से गंगाजी का एक नाम 'जाहवी' हुआ। यह जह्नुद्वीप 'वन्दन' भक्ति का क्षेत्र है। इस द्वीप का माहात्म्य श्रील भक्तिविनोद ठाकुर रचित 'श्रीनवद्वीप धाम माहात्म्य' ग्रन्थ के तेरहवें अध्याय में इस प्रकार वर्णित है "

एबे चल याइ मोरा जहुर आवास।।

बलिते-बलिते सबे जान्नगर याय।
जहुतपोवन-शोभा देखिवारे पाय ।।

नित्यानन्द वले एइ जहुद्वीप नाम।
भद्रवन नामे ख्यात मनोहर धाम ।।

एइस्थाने जहुमुनि तप आचरिल।
सुवर्ण प्रतिमा गौर दर्शन करिल।।

हेथा जहुमुनि बैसे सन्ध्या करिवारे ।
भागीरथी- वेगे कोषाकुशि पड़े धारे।।

धारे पड़ि' कोषाकुशि भासिया
चलिल।
गण्डुषे गंगार जल, सब पान कैल।।

भगीरथ मने भावे कोथा गंगा गेल।
विह्वल हइया तबे भाविते लागिल ।।

जहुमुनि पान कैल सब गंगाजल।
जानि' भगीरथ मने हइल विकल।।

कतदिन मुनिरे पूजिल महाधीर ।

अंग विदारिया गंगा करिल बाहिर ।।

सेइ हइते 'जाहवी' हैल नाम ताँर।
जाह्नवी बलिया डाके सकल संसार।।

कतदिन परे हेथा गंगार नन्दन।
भीष्मदेव कैल मातामह दरशन ||

भीष्मेरे आदर करे जहु महाशय ।
बहुदिन राखे ताँरे आपन आलय ।।

जहुस्थाने भीष्म धर्म शिखिल अपार।
युधिष्ठिरे शिक्षा दिल सेइ धर्मसार ||

नवद्वीपे थाकि' भीष्म पाइल
भक्तिधन।
वैष्णव- मध्येते भीष्म हइल गणन।।

अतएव जहुद्वीप परमपावन ।
हेथा वास करे सदा भाग्यवान जन ।।"

भावानुवाद — श्रीनित्यानन्द प्रभु श्रीजीव गोस्वामी जी से कहते हैं कि चलो जीव! अब हम जहमुनि के स्थान पर चलें। - जहुमुनि मुनि के तपोवन की शोभा देखकर श्रीनित्यानन्द प्रभु कहने लगे — यह जह्नुद्वीप है। यह मनोहर धाम भद्रवन के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस स्थान पर जहुमुनि ने तपस्या करके श्रीगौरसुन्दर जी के सोने के विग्रह के दर्शन किये थे। यहाँ जहुमुनि सन्ध्या करने को बैठे थे कि भागीरथी के वेग से मुनि की अर्चन- पूजा की सामग्री जल के प्रवाह में बह गई। पूजा के सामान को बहते देखकर मुनि ने एक

चुल्लू में गंगा जी का जल लिया और पी गये। राजा भगीरथ ने गंगा के प्रवाह को नहीं देखा तब विहल होकर मन में सोचने लगे कि गंगा कहाँ चली गईं। जब भगीरथ जी को यह मालूम पड़ा कि जहुमुनि जी ने गंगा का सब जल पान कर लिया है तो वे बड़े बेचैन हो गये। महाधीर राजा ने वहाँ पर बैठकर कुछ दिन मुनि की पूजा की और उन्हें सन्तुष्ट किया। सन्तुष्ट होकर मुनि ने अपनी जाँघ को चीरकर गंगा जी को बाहर किया। क्योंकि गंगा जी जहुमुनि की जाँघ को चीर कर बाहर आयी थीं, इसलिए

गंगा जी को संसार में लोग 'जाहवी' नाम से भी पुकारते हैं।

इस घटना के कुछ दिन बाद गंगा जी के पुत्र श्रीभीष्मदेव अपने नाना, श्रीजहुंमुनिजी का दर्शन करने के लिये वहाँ आये थे। भीष्मदेव को, जहुमुनिजी ने अपनी कुटिया में बहुत आदर के साथ रखा था। जहुमुनि से, भीष्मदेवजी ने बहुत प्रकार के धर्मों की शिक्षा पाई थी। वही धर्म की शिक्षा भीष्म जी ने अपने प्रिय युधिष्ठिर को दी थी।

नवद्वीप में रहकर भीष्मदेव ने भक्ति - धन प्राप्त किया था, जिससे वैष्णवों के बीच उनकी गणना हुई थी।

यही कारण है कि जहुद्वीप परमपावन स्थान है जहाँ पर भाग्यवान लोग सदा वास करते हैं।

* * * * * * *

श्रीलगुरुदेव